प्रेम कुमार मल्लिक

अकादेमी पुरस्कारः हिन्दुस्तानी गायन संगीत

PREM KUMAR MALLICK

Akademi Award: Hindustani Vocal

बिहार के दरभंगा में 15 फरवरी 1962 को जन्मे, श्री प्रेम कुमार मल्लिक का सम्बंध दरभंगा घराने के प्रसिद्ध संगीत परिवार से है और आप परिवार की 12वीं पीढ़ी का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। कम उम्र में ही अपने पिता श्री विदुर मल्लिक के मार्गदर्शन में आपने ध्रुपद गायन का प्रशिक्षण प्राप्त करना शुरू कर दिया था। आपको अपने दादा पंडित सुखदेव मल्लिक का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ है। ध्रुपद ही नहीं बल्कि खयाल, ठुमरी–दादरा, टप्पा और भजन गायकी में भी आपको महारत हासिल है।

आप आकाशवाणी और दूरदर्शन पर ध्रुपद गायन के 'शीर्ष' और खयाल गायन के 'ए' श्रेणी के कलाकार हैं। आपने देश–विदेश में आयोजित होने वाले विभिन्न प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में अपनी प्रस्तुतियाँ दी है। सेलेस्टियल हारमोनीज, नवरस रिकॉर्ड्स, हर्ड म्यूजिक, बिहान म्यूजिक, म्यूजिक टुडे जैसी अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय संगीत कम्पनियों द्वारा श्री मल्लिक के कई ऑडियो और वीडियो कैसेट, सीडी और डीवीडी जारी किए गए हैं। आपने दरभंगा घराना एवं बंदिशें नामक पुस्तक की रचना भी की है। बर्लिन में ध्रुपद पढ़ाने के लिए डीएएडी द्वारा आपको अंतरराष्ट्रीय आवासीय फेलोशिप भी दी गई है।

दरभंगा घराने की दुर्लभ संगीत रचनाओं का, इनके अभिलेखीय महत्व को देखते हुए, आपके स्वर में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए), भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा विशेष दस्तावेजीकरण किया गया है।

ध्रुपद संगीत में योगदान के लिए, आपको कई प्रतिष्ठित उपाधियों और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें वर्ष 1997 में अखिल भारतीय ध्रुपद मेला संघ, वाराणसी द्वारा प्रदान किया गया तुलसी पुरस्कार; वर्ष 1999 में ध्रुपद कला केन्द्र, इंदौर द्वारा प्रदान किया गया ध्रुपद विभूषण; वर्ष 2010 में इंटरनेशनल ध्रुपद धाम ट्रस्ट, जयपुर (राजस्थान) द्वारा प्रदान किया गया ध्रुपद मणि; वर्ष 2015 में बिहार कला राष्ट्रीय पुरस्कार; वर्ष 2019 में संगीत कला निकेतन, जयपुर द्वारा प्रदान किया गया पंडित मनमोहन भट्ट मेमोरियल लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रमुख हैं।।

श्री प्रेम कुमार मल्लिक को हिन्दुस्तानी गायन संगीत (ध्रुपद) में योगदान के लिए वर्ष 2019 के संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Born on 15 February 1962 at Darbhanga in Bihar, Shri Prem Kumar Mallick belongs to a illustrious musical family of the Darbhanga gharana and represents the unbroken 12th generation of this lineage. His training in Dhrupad vocal started at an early age under his father Vidur Mallick, and grandfather Sukhdev Mallick. He has mastery not only in Dhrupad but also in Khayal, Thumri-Dadra, Tappa and in rendering Bhajans.

A 'Top' grade artist in Dhrupad vocal, and 'A' grade in Khayal music from All India Radio and Doordarshan, he has performed widely. Shri Mallick has published a number of audio and video cassettes, CDs and DVDs. He has a book titled *Darbhanga Gharana Evam Bandishe* to his credit. He has been given an international residential Fellowship by DAAD, Germany to teach Dhrupad in Berlin. The rare compositions of his tradition as rendered by him have been recorded for a Special Archival Documentation by the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), Govt. of India, New Delhi.

For his contribution to Dhrupad music, he has been honoured with the Tulsi Award conferred by the Akhil Bharatiya Dhrupad Mela Association, Varanasi in 1997; the Dhrupad Vibhushan from Dhrupad Kala Kendra, Indore in 1999; the Dhrupad Mani title by the International Dhrupad Dham Trust, Jaipur (Rajasthan) in 2010; the Bihar Kala Rastriya Puraskar in 2015; and the Pandit Manmohan Bhatt Memorial Lifetime Achievement Award in the field of music by Sangeet Kala Niketan, Jaipur in 2019.

Shri Prem Kumar Mallick receives the Sangeet Natak Akademi Award for the year 2019 for his contribution to Dhrupad music.